उदयति विततोर्ध्व-रश्मि-रज्जा-वहिमरुचौ हिमाधाग्नि याति चास्ताम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्।।

(शिशुपालवध–4 / 20)

माघ ने छन्दों के चयन में प्रवीणता का प्रदर्शन किया है। भावगाम्भीर्य तथा चित्रालंकारों के प्रयोग में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त उनके काव्य में वंशस्थ, उपजाति, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, मालिनी, पुष्पिताग्रा, वैतालीय, रुचिरा आदि छन्दों का प्रयोग है।

इस प्रकार अपनी वर्णन-चातुरी, भाषा-सौष्ठव, उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य, भावाभिव्यक्ति, विविध विषयों के ज्ञान आदि विशेषताओं के कारण **'माघे सन्ति त्रयो गुणाः'**, **'तावद्भाभारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः'**, **'माघे विघ्नोत्साहानोत्सहन्ते पदक्रमे'** जैसी प्रशस्तियाँ महाकवि माघ के वैशिष्ट्य को प्रदर्शित करती हैं।

3.6 श्रीहर्ष

इस इकाई के अन्तर्गत आपने संस्कृत साहित्य के प्रमुख महाकवियों यथा कालिदास, अश्वघोष, भारवि और माघ के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन किया। इसी क्रम में अब आप श्रीहर्ष के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

3.6.1 जीवन-वृत्त

भारवि और माघ के पश्चात् संस्कृत के महाकवियों में श्रीहर्ष का नाम प्रमुख है। नैषधीयचरित के अनुसार श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर तथा माता का नाम मामल्लदेवी था। कानपुर नरेश जयचन्द उनके आश्रयदाता थे। कश्मीर के उद्भट विद्वानों ने इनके ग्रन्थों की प्रशंसा की है।

श्रीहर्ष के काल के विषय में सर्वप्रथम ब्यूलर ने प्रकाश डाला है। राजशेखर सूरि कृत 'प्रबन्धकोष' के आधार पर उन्होंने अपना मत प्रकट किया है। इस तथ्य के अनुसार श्रीहर्ष कान्यकुब्ज नरेश जयन्तचन्द्र के आश्रित कवि थे। जयन्तचन्द्र, कुमारपाल का समकालीन था। 1163 ई0 से 1174 ई0 तक जयन्तचन्द्र और कुमारपाल का काल माना जाता है। अतः इस आधार पर ब्यूलर ने नैषधीयचरित की रचना का काल 1163-1174 के मध्य माना। इस प्रकार श्रीहर्ष का काल 12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जा सकता है।

3.6.2 कर्तृत्व

श्रीहर्ष विरचित एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ नैषधीयचरित है जिसमें 22 सर्ग हैं। इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से गृहीत है। इस महाकाव्य में मुख्यतः नल-दमयन्ती के प्रणय और परिणय का वर्णन है। दमयन्ती के गुणों को सुनकर नल का उसकी ओर आकृष्ट होना, वन विहार, हंस को पकड़ना, हंस-विलाप, नल के आग्रह पर हंस का कुण्डिनपुर जाना, दमयन्ती की नल के प्रति अनुरक्ति, दमयन्ती का नख-शिख वर्णन, नल-दमयन्ती वार्तालाप, स्वयंवर वर्णन, विवाह संस्कार, कामक्रीड़ा, देवस्तुति, सूर्योदय, चन्द्रोदय आदि के विस्तृत वर्णन के साथ महाकवि ने अन्त में कवि-वृत्त का भी वर्णन किया है, जिससे उनके जीवन-वृत्त के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है।

नैषधीयचरित के सर्गान्त के श्लोकों में श्रीहर्ष ने स्वयं को स्थैर्यविचारप्रकरण, श्रीविजयप्रशस्ति, खण्डनखण्डखाद्य, शिवशक्तिसिद्धि, नवसाहसांकचरित आदि ग्रन्थों का प्रणेता भी बताया है।

3.6.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

श्रीहर्ष संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य महाकवियों में एक हैं। उन्होंने सुकुमार मार्ग की सरसता तथा विचित्र मार्ग की प्रौढ़ता का समन्वय करके नैषधीयचरित महाकाव्य की रचना की । पदलालित्य, स्वरमाधुर्य, प्रसाद एवं ओज गुण, वैदर्भी और गौडी रीति, उत्प्रेक्षादि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग श्रीहर्ष के काव्य की विशेषतायें हैं। श्रीहर्ष की भाषा में माधुर्य, लयात्मकता, भावबोध, संगीतात्मकता, ध्वन्यात्मकता आदि के दर्शन होते हैं। उनमें भावाभिव्यक्ति की अपूर्व क्षमता है। यद्यपि उनके भावों में गाम्भीर्य है किन्तु अभिव्यक्ति के साथ उनके सौन्दर्य में द्विगुणित वृद्धि होती है। एक उदाहरण देखिए–

यदस्य यात्रासु बलोद्धतं रजः स्फुरत्प्रतापानलधूममञ्जिम।
तदेव गत्वा पतितं सुधाम्बुधौ दधाति पङ्कीभवदङ्कतां विधौ।।

(नैषधीयचरित–1/8)

नैषधीयचरित का अंगीरस शृंगार है। श्रीहर्ष ने स्वयं अपने काव्य के लिये **शृङ्गारभङ्गया**' (1/145) तथा **'शृङ्गारमृतशीतगुः'** (11/130) का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त वीर, करुण, हास्य, अद्भुत् आदि रस गौण हैं। महाकवि ने शृंगार के सम्भोग और विप्रलम्भ दोनों पक्षों का वर्णन किया है। शृंगार के सम्भोग पक्ष का एक उदाहरण देखिये–

वल्लभस्य भुजयोः स्मरोत्सवेदित्सतोः प्रसभमङ्कपालिकाम्।
एककश्चिरमरोधि बालया तल्पयन्त्रणनिरन्तरालया।।

(नैषधीयचरित–18/43)

इसके अतिरिक्त हंस-विलाप में करुण रस तथा सोलहवें सर्ग में बारात गये लोगों के भोजन-व्यापार के वर्णन में शृंगार पर आश्रित हास्य रस का प्रयोग मिलता है।

श्रीहर्ष की भाषा अलंकारयुक्त है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, श्लेष अतिशयोक्ति, व्यतिरेक, विरोधाभास, विभावना आदि अलंकारों का प्रयोग महाकवि ने किया है। उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति अलंकार श्रीहर्ष को नितान्त प्रिय हैं। दमयन्ती के मुख की रचना के प्रसंग में उत्प्रेक्षा के प्रयोग का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

हृतसारमिवेन्दुमण्डलं, दमयन्तीवदनाय वेधसा।
कृतमध्यबिलं क्लिोक्यते, धृतगम्भीरखनीखनीलिम्।।

(नैषधीयचरित–2/25)

छन्दयोजना में भी श्रीहर्ष ने उत्कृष्ट कौशल का प्रदर्शन किया है। उन्होंने हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, वैतालीय, उपजाति आदि छन्दों के प्रयोग द्वारा अपने काव्य को लयात्मकता प्रदान की है।

बोध प्रश्न 3

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये–

   i) सोमदेव ने .... में माघ का उल्लेख किया है।

   ii) शिशुपालवध महाकाव्य की कथा महाभारत के .... पर्व से ली गयी है।